

ЗА ГРЪЦКИТЕ ИЗВОРИ НА УЧИТЕЛНОТО ЕВАНГЕЛИЕ НА КОНСТАНТИН ПРЕСЛАВСКИ

ДОБРИЕЛА КОТОВА



Institute of Balkan Studies
and Center of Thracology
Bulgarian Academy of Sciences



The Vocabulary of Constantine of
Preslav's Uchitel'noe evangelie ('Didactic
Gospel'): Old Bulgarian-Greek and Greek-
Old Bulgarian Word Indices КП-06-Н50/2



ФОНД
НАУЧНИ
ИЗСЛЕДВАНИЯ

МИНИСТЕРСТВО НА ОБРАЗОВАНИЕТО И НАУКАТА



1 лист на най-старото копие на Учителното евангелие

Москва, ГИМ, Син. 262, втора половина на 12. в.

Миниатюра на княз Борис I.

вероятно е било съставено още през 9 в. и написано на глаголица.

Четири пълни преписа:

- Синодален (ГИМ, Син. 262, втората половина на XII в.)
- Гилфердингов (РНБ Гилф. 32, 1286 г.),
- Виенски (ÖNB, Cod. Slav. 12, XIV в.)
- Хилендарски (Хил. 385, 1344 г.)

Пълно издание на УЕ, направено по Синодалния препис и допълнено с разночетенията от останалите три преписа, дело на Мария Тихова:

Тихова, М. Старобългарското Учително евангелие на Константин Преславски. С детайлното описание от Елена Уханова на най-стария препис (ГИМ Син. 262). Freiburg i. Br., 2012 (Monumenta linguae slavicae, 58).

УЕ обхваща 51 слова

Словата се състоят от

- встъпителни думи
- средна (тълкувателна) част
- заключение

Смята се, че от Константин са написани

- уводите и заключенията
- някои пасажии в тълкувателната част на слово 19
- цялата 42 беседа (ΚΟΝ̄. ΠΡΩ̄. ΣΖ- ΚΑΖΑΝΝΗ̄. ΒῙ. ΚΕ
ΒΑΝΓΛΑΝῩ. Ὠ̄ ΛΟΥΚῩ.)

СЪΚΑΖΑΝΝΗ̄ на

- Йоан Златоуст
- Кирил Александрийски
- Изидор Пелусиот

Знае се, че средната (тълкувателната) част е

превод на пасажии от
византийски новозаветни катени

Гръцките оригинали обаче и досега се търсят в:

- catenae integrae in Matthaeum et Joannem (CPG C 110.1 et CPG C140.1)
- catena B in Lucam (CPG C131)

(Cramer, J. (ed.). Catenae graecorum patrum in Novum Testamentum. 1. et 2. Ad fidem Codd. Mss. Oxonii, 1840, 1841).



Константин Преславски е сред най-значимите фигури на българската духовна култура през IX-X в., преводач и автор на творби от различни жанрове на старобългарската литература. Неговият проповеднически сборник Учително евангелие се състои от слова за неделните дни през годината от Великден до Цветница. Повечето от тях са преводни текстове, атрибуирани на различни църковни отци, но техните встъпления и заключения, цялата 42 беседа и Прологът са оригинално дело на Константин Преславски. Паметникът е запазен в четири пълни преписа – Синодален, Виенски, Гилфердингов и Хилендарски. Известни са и още няколко преписа на отделни слова. В целия си обем корпусът бе издаден през 2012 г. от Мария Тихова „Старобългарското Учително евангелие на Константин Преславски“ като том 58 от поредицата *Monumenta linguae slavicae dialecti veteris*.



Заклучения

след сравнение с множество ръкописи на катени към Евангелията от Матей, Йоан и Лука и с оригиналните хомили на Йоан Златоуст към Матей и Йоан

1. Извори за превода на екзегетичната част:

- катени от тип А в тяхната основна форма: *catenae primae in Matthaeum et Joannem* (CPG C 110.1 и CPG C 140.1),
- *catena in Lucam Typus A* (CPG C130).

2. Компилации на Константин в средните части, понякога и в заключенията, на няколко слова от:

- катенен текст,
- пасажии от хомилиите на Йоан Златоуст,
- собствени думи на самия Константин.

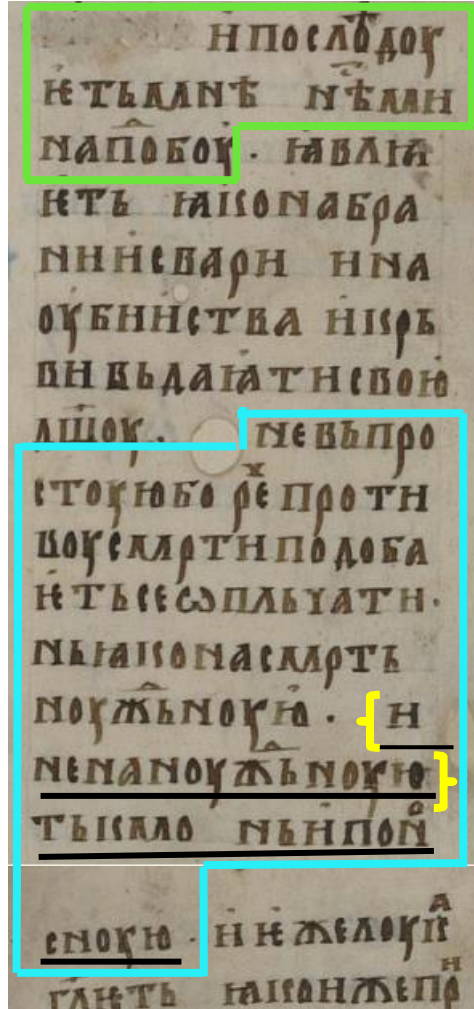
3. Въведения:

- собствени текстове на Константин;
- преход към тълкувателната част чрез евангелски цитат по модела на хомилиите на Йоан Златоуст.

А еже нже
не носить крста сво-
его. **и послѣдоује**
тъ по мнѣ. нѣ мнѣ
на подобѣ. ꙗвлаетъ
тъ ꙗко на бранн и
свары. и на оубни
ства и крѣн вѣдаати
// свою дшѣ.

не въ простои бо рече
протнвоу. сѣмьртн
подобаетъ сѣ оплзѣ
ати. нѣ ꙗко и на
сѣмьртн ноужьноу
тѣкмо. **нѣ н**
поносѣноу.

Sin. 54b15-54c9/
Tihova 118



Gilf. 32 / 36d11-37a2

catena integra in Mat. /Cramer I, 81.26-29 / Cod. gr. Coisl. 23, 34r
Τὸ δὲ, “ὅστις οὐ λαμβάνει τὸν σταυρὸν αὐτοῦ,” **καὶ τὰ ἐξῆς,**
σημαίνει ὥστε εἰς πόλεμον καὶ μάχην ἐκδιδόναι τὴν ἑαυτοῦ ψυχὴν, **καὶ**
σφαγὰς καὶ αἵματα, καὶ θάνατον βίαιον καὶ ἐπονείδιστον.

catena prima: ПЪЛНО СЪОТВѢТСТВІЕ С ТЕКСТА В Gilf.32

München, UB, 2° 30 (Cim. 16), Paris, BnF, Gr. 199, 200, 201, 700, 701,702, 704, Rome Bibl. Angel., Gr. 67 u. a.

Τὸ δὲ, “ὅστις οὐ **βαστάζει** τὸν σταυρὸν αὐτοῦ **καὶ ἀκολουθεῖ ὀπίσω**
μου, οὐκ ἔστιν μου ἄξιος“ σημαίνει ὥστε εἰς πόλεμον καὶ μάχην
ἐκδιδόναι τὴν ἑαυτοῦ ψυχὴν, καὶ σφαγὰς καὶ αἵματα. **οὐδὲ γὰρ ἀπλῶς**
εἶπεν πρὸς θάνατον δεῖ παρατέταχθαι, ἀλλ’ ὅτι καὶ πρὸς θάνατον
βίαιον καὶ οὐ πρὸς βίαιον μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐπονείδιστον.

catena prima aucta: BAV Arch. di S. Pietro B 59, Bodl. Libr. Auct. T.1.4 (= Cramer I, 481), BnF Grec 188, BNM Z. Gr. 544 u. a.

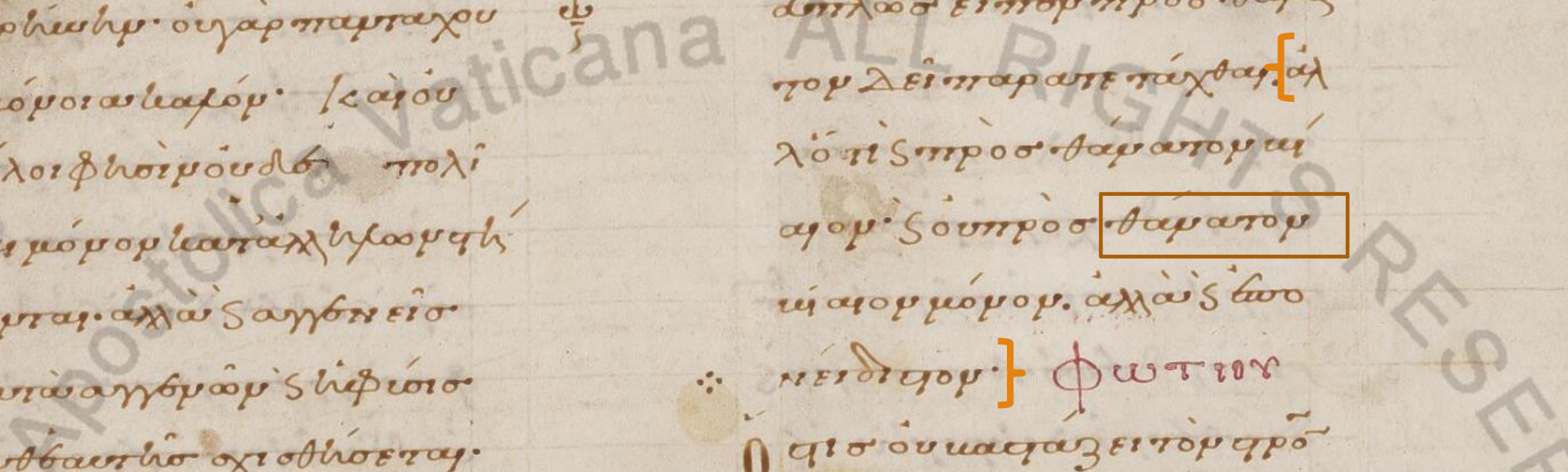
Τὸ δὲ, “ὅστις οὐ **βαστάζει** τὸν σταυρὸν αὐτοῦ **καὶ ἀκολουθεῖ ὀπίσω**
μου, οὐκ ἔστιν μου ἄξιος“ σημαίνει ὥστε εἰς πόλεμον καὶ μάχην
ἐκδιδόναι τὴν ἑαυτοῦ ψυχὴν, καὶ σφαγὰς καὶ αἵματα. **οὐδὲ γὰρ ἀπλῶς**
εἶπεν πρὸς θάνατον δεῖ παρατέταχθαι, ἀλλ’ ὅτι καὶ πρὸς θάνατον
βίαιον καὶ οὐ πρὸς θάνατον βίαιον μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐπονείδιστον.

ρο 5^ο μδ
 νις
 ν της
 Νθε
 ανδ
 κηρα
 λον
 νγα
 λον
 τον
 ειδ

εσθυγατδραμ' τοδθ οηισ ουιασ αυ
 ζε τον ηρο ραιτου και αυλολουθη οπι
 σο μου. ουιατη ρμου ανζιοσημαι μη
 οαθ ε απολθμο ρικαι μαχασθελιδο
 ραιτη ρδαι του ηχηρ και σφανασις
 αιμαται. ουδκαρ ανωσ ε πδρ
 προσθαματο μδ ε παρατη αιχθαι. αλλ
οτι και προσθαματο μειαιου και ου
προσ μειαιου μομου. αιμα και δυο μη
διγομ και ο πδρδθ ομου και σλαγα.

υ· την τὰρ | καλὴν
υλευ· ἡ καρὴ διαφω
υ· ἔλκεται καὶ ἀποίκαται
ιρὴν κηρ· οὐ γὰρ παρταχῶν
ὁμόμοιαι καφόν· Ἰεαίου
φίλοι φίλοι μου δὲ πολί
ται μόμοι κατὰ ἀλλήλων κη
σορται· ἀλλὰ ἡ ἀγγελία εἰς
Ἰεαίω ἀγγελοῦ ἡφύοιο
καθ' αὐτὴν ὁμοίησεται·

πὸ λθμοῦ ἡ μάχασ βλεπιδό
ματὴν τὴν βαυτοῦ φυχλῶς
σφασίς ἄιματος· οὐδ γὰρ
ἀπλοῶς εἶπεν προσθαμά
τον Δεῖτε παρατετάχθη· ἀλ
λότις προσθαματομοί
αγοῦ· ἡ προσθαματομο
υατομομοῦ· ἀλλὰ ἡ ἄπο
νειδιτοῦ· φωτιαν
οἱ σὺ ματαζει τὸν ἄπο



Компиляция от:

- катенен текст,
- подбрани от самия Константин откъси от 61 хомилия към Матей на Йоан Златоуст,
- собствени думи на Константин: няколко изречения, словосъченатия, отделни думи.

Преводът на катенния текст като цяло е дословен и сух.

В превода на откъсите от хомилиите – повече свобода, съобразяване с нивото на публиката, повече емоционалност.

Н ДАВЪИДЪ ЦРЬ • Н НУВЪ БОГАТЪ • / Δαυῖδ βασιλεὺς ἦν • καὶ ὁ Ἰὼβ χωρίων ἀπήλαυε καὶ πολλῶν προσόδων •

Причина:

Катенният текст представлява вече готова компиляция от екцерпирани и изчистени от риторика фрагменти от хомилиите.

В процеса на превода на пасажите, заети директно от беседите на Йоан Златоуст, на Константин му се налага сам да екцерпира, да съкращава дълги пасажии, размества и свързва отделни изречения и по-големи части в последователно изграден текст. Често в тези случаи Константин запазва риторичния характер на хомилията, проявявайки литературен усет и предпочитания към една или друга риторична фигура.

(1) ДАСТЪ ЖЕ НАМЪ КРЪЩЕННІЕ• НА
ОСТАВЛІЕННІЕ ГРѢХОВЪ• Н ОТАТНІЕ МОУЧЕН
НІА• Н НАСЛѢДНІЕ ЦРЬСТВНІА• Н ТЪМАМН
СЪДѢІА БЛАГАІА• СЪБЛЮДАЮЩЕМЪ•
ВЪСΕΓΔΑ ЖΗΒΟΤΒΟΡΑΨΙΑΙΑ ΙΕΓΟ ΖΑΠΟΒѢДН•

(2a) НЪ Н СНА СВОΙΕΓΟ ДАСТЪ ЗА НЪІ•

(2b) Н НЕΒΟ НАМЪ ΟΤЪΚΛΙΟΥΗ• Н ΡΑΗ
ΟΤЪΒΒΡΖΕ **(2c)** Н ΡΟΥΚΟΥ ΠΡΟСТЪΡΕ Н ΔΧЪ
НΖΛΗΑ ΒЪ

СРДЦА НАША• **(2d)** ТѢМЪЖЕ

БΛΓΟ ΒΡѢΜΑ НΖΙΝѢ ΡΕΨІ• ΟΛΕ ΓΛΟΥΒΗΝΑ Β
ΓΑΤЪСΤВА Н ΠΡѢΜΟΥΔΡΟСТН• Н ΡΑΖΟΥΜΑ Β
ЖНІА• **(3)** ЗА СΗΧЪ ВЪСѢΧЪ ΚΑΚΟ НАМЪ
ΠΟΔΟΒΑШЕ ЖΗΤΗ• ΟΥΒΟ ΑΨΕ Н ΠΟ ВЪСА
ΔΒНΗ ΟΥΜΗΡΑΛΗ ΒΖΙΧΟМЪ• ЗА ΛΥΒΑΨΙΑΓΟ
НΖІ СΗЦЕ• ΒΖΙΧΟМЪ ΛІ НСПΖΛΗΗΛΗ ΠΡΟΤΗ
ΒΟΥ {ТЪΥΒНОЕ WG ТЪΥНО Н} ТОМОУ•
ΠΑΥΕ ЖЕ ΗΝΟ ΒΑΨЕ [add. • G64d22] НН
ΚΑΚΟЖЕ•

[Μετὰ γὰρ τὸ ἐκβαλεῖν παραδείσου, καὶ τὰ μυρία ἐκεῖνα ἐργάσασθαι ἀγαθὰ, καὶ τὰς ποικίλας οἰκονομίας ἐπιτελέσαι,] **(2a)** καὶ τὸν υἱὸν ἔπεμψε τὸν ἑαυτοῦ [ὑπὲρ τῶν εὐεργετηθέντων καὶ μισούντων,] **(2b)** καὶ τὸν οὐρανὸν ἡμῖν ἀνέωξε καὶ τὸν παράδεισον αὐτὸν ἀνεπέτασε, [καὶ υἱοὺς ἡμᾶς ἐποίησε, τοὺς ἐχθροὺς, τοὺς ἀγνώμονας]. **(2d)** Διὸ καὶ εὐκαιρον νῦν εἰπεῖν· Ὡ βάθος πλούτου καὶ σοφίας καὶ γνώσεως Θεοῦ!

(1) Ἔδωκε δὲ ἡμῖν καὶ βάπτισμα ἀφέσεως ἀμαρτημάτων, καὶ τιμωρίας ἀπαλλαγῆν, καὶ βασιλείας κληρονομίαν, καὶ μυρία ἐπηγγείλατο κατορθοῦσιν ἀγαθὰ, **(2c)** καὶ χεῖρα ὥρεξε, καὶ πνεῦμα ἐξέχεενεῖς τὰς καρδίας ἡμῶν. [Τί οὖν,] **(3)** μετὰ τοσαῦτα καὶ τηλικαῦτα ἀγαθὰ, πῶς ἡμᾶς διακεῖσθαι ἐχρῆν; ἄρα εἰ καὶ καθ' ἐκάστην ἀπεθνήσκομεν τὴν ἡμέραν ὑπὲρ τοῦ οὕτως ἡμᾶς φιλοῦντος, ἐξετίννυμεν ἂν τὴν ἀξίαν, μᾶλλον δὲ τὸ πολλοστὸν τῆς ὀφειλῆς κατατίθεμεν; Οὐδαμῶς·

(1) ἔδωκε δὲ ἡμῖν καὶ βάπτισμα ἀφέσεως ἀμαρτημάτων, καὶ τιμωρίας ἀπαλλαγῆν, καὶ βασιλείας κληρονομίαν, καὶ μυρία ἐπηγγείλατο ἀγαθὰ, τοῖς τηροῦσι πάντοτε τὰς ζωοποιοῦς αὐτοῦ ἐντολάς·

(3) ὑπὲρ τούτων οὖν ἀπάντων πῶς ἡμᾶς διακεῖσθαι ἐχρῆν; ἄρα εἰ καὶ καθ' ἐκάστην {+ ἀπεθνήσκομεν} ἡμέραν, ὑπὲρ τοῦ ὄντος {οὕτως} ἡμᾶς φιλοῦντος, ἐξεπληροῦμεν τὴν ἀξίαν· μᾶλλον δὲ τὸ πολλοστὸν τῆς ὀφειλῆς κατατίθεμεν {add ;} δὲ {om.} οὐδαμῶς·

(1) ѸѸТО ОУѸО БОУДЕТЬ • НАМЪ СИЦЕ ЖИѸОУЩЕМЪ • И ЗАКОНΟΥ ЕГО ДОСАЖАЮЩЕМЪ • ПО ВСѦ ДЪНИ {add. • Н, ραζστογανιε G} (2) НЪ НЕ ГИѸВАНТЕ СѦ АЩЕ НСПОУЩЮ ІАΖΥΚΪΖ ΓΡѸΧΥΙ ΗΨΗΤΑΗ • НЕ ВЪІ БО ОКЛЕВЕЩЮ ТЪКЪМО НЪ И СЕБЕ • (3) ОΤЪΚΟΥΔΟΥ БО ΧΟΨΕΤΕ ΔΑ ΝΑΥΗΝΟΥ • ΟΤЪ ΡΑΒЪ АН • ΟΤЪ СВОБОΔЪ АН • ΟΤЪ ΒΟΗΗЪ АН • ΟΤЪ ΠΟΨΕΛΙΑΗЪ АН • ΟΤЪ ΚΗΑΖЪ АН • ΟΤЪ ΛΥΔΗΗ АН • ΟΤЪ ЖЕНЪ ЛІ • ΟΤЪ ΜΟΥЖЪ АН • ΟΤЪ ΔѸТΗΗ АН • ΟΤЪ СТАРЪЦЪ АН • ΟΤЪ ΚΟΤΟΡΑГО ΡΑΨΗΗΗ • ΤЪ ΚΟΤΟΡΑГО ΡΟΔА • ΟΤЪ ΚΟΤΟΡΑГО САНА • ΟΤЪ ΚΟΤΟΡЪІНА УЪСТН • ΧΟΨΕΤΕ АН ΔΑ ΝΑΥΗΝΟΥ ΟΤЪ ΒΟΗΗЪ • УѸТО ЖЕ ОУѸО НЕ СЪГРѸШАЮТЪ АН СΗН ПО ВСѦ ДЪНИ • ДОСАЖАЮЩЕ • ОКЛЕВЕТАВАЮЩЕ • НЕΗСТОΒΕΨТВЪЮЩЕ • ВЪАΚΟΜЪ ТЪЪЫНН СОУЩЕ • ТЪЪЫНЪІМЪ ОУѸО ЗАВΗΔΑЩЕ • ΡѸВЪНОУЮЩЕ ГЪРΔΑЩЕ СѦ • КЪ СОУΨΗΗМЪ ПОΔЪ ΗΗМН • ΑΗΧΟΗΜΑΤΕΛΕ • КЪ ΠΟΚΗΜΑЮΨΗΗМЪ КЪ ΗΗМЪ • И ІАΚΟ ΚЪ ΟΤΗΨΗЮ ΠРІѸѸΓΑЮЩЕМЪ СОУΨΟΨΑΤΗ • (4) ΠРΗΝΕСΗ ОУѸО ПО ΡΑΔΟΥ СЪΨΕΤΑΗМЪ ΧѸЪ ΖΑΚΟΗЪ • ΗЖЕ ΡΕУЕТЪ ВРАТОВИ СВОΙΕМОУ ΒΟΥІЕ • ΠΟΔΟΒΗЪ ІЕСТЪ ΓΕΟΗѸ ΟΓΗΗѸ • ΗЖЕ ВЪΖЪРΗТЪ НА ЖЕНОУ ΔΑ ΠΟΧΟΨЕТЪ ІЕН • ОУЖЕ ΠРѸΛΟΒЪІ СЪΔѸІА СЪ НІЕЮ • ВЪ СЪРΔΥЦΗ СВОΙЕМЪ • АЩЕ НЕ СЪМѸРΗТЪ ТЪКЪМО СЕБЕ • ІАΚΟ ΟΤΡΟΥΑ НЕ ВЪНН ΔΕΤЪ ВЪ ѸРѸСТВО НЕΒΕΨΗНОЕ • (5) КЪТО БО ΜΟЖЕТЪ ΗΖΔРЕΨΗ ΠРѸΛΕΨΤΗ ΗΧЪ • СМѸΧЪІ • ΠΡΑΖΔΗЪІНА ΒΕСѸΔЪІ • СΚѸѸРЪНЪІНА СΛΟΨΕСА • О ΛІΧΟΗΜΑΗΗΗ ЖЕ ΗѸЪСЪТЪ ΛЪΖѸЪ ΗΗ ΗΖΔРЕΨΗ • (6) НЕ ΧΟΨΕΤΕ АН ΔΑ СΗНА ΟΨΑΒΛШЕ • НА ΗНЪІ СѦ ΠРѸΛΟЖΗМЪ • ТО ОУЖЕ НСПЪІΤΑΗМЪ ΔѸΔΑΤΕΛΗЪ ΡΟΔЪ • СΗН БО ΜΗΑТЪ ΠΡΑВЪΔЪНЪІΗΗΗ СВОΗМІ ΤΡΟΥΔЪІ ЖΗΤІ (6а) ΠΡΟΔΑΗΗЕМЪ Η ΚΟΥΠΛІЕЮ НЕΠΡΑВЪΔΟΥ СЪΒΗ ΡΑУТЪ • Η ΠΗСАΓЪІ • Η ΠРѸСΤΟΥΠΟΚΛΗΑΤΗА КЪ НЕΠΡΑВЪΔѸ • Η ΤΡΟΥΔѸ СВОΙЕМЪ ΠΗΛΑΓΑУТЪ • (6б) КЪТО ΜΟЖЕТЪ ΗΨΗСΤΗ ОКЛЕВЕТАΗΗА • ДОСАЖЕΗΗА ΖΑΗΜΑΗΗА • ΑΗΧЪІ • ΚΟΥΠΛЮ СОУΨΑ ΠЪΛΗЪІ ВСАΚΟІА ΛЪСΤΗ • (7) НЪ ΧΟΨΕΤΕ АН СЪІА ΠΑΚЪІ ΟΨΑΒΛШЕ • ΗНЪІ ΔΑ ΗΨѸТЕМЪ • ΜЪНАΨΑІА СѦ ΠΡΑВЪΔЪНЪІ СОУΨА • ΚΟΤΟΡΗΗ ЖЕ СОУТЪ СΗН • ΗΜΟΥΨΗΗ СΕΛА • КЪТО ЖЕ СΗΧЪ • ΟΒΗΔЪΛ ΗѸѸ • АЩЕ БО КЪТО НСПЪІΤΑЕТЪ • ΚΑΚΟ ΝΑΛΕЖАТЪ НА ΔѸΔΑΤΕΛА • СѸРѸΠѸѸШАІА ОУΖЪРΗ ТЪ ΒΑΡЪΒΑΡЪ • ΡΑΒΟΤЪІ ΛΟΥΤЪІ ΖΑΔѸЮЩЕ • ІАΚΟ ΟΨΛΟΜЪ Η ΜЪСΚΩΜЪ • ΠΑУЕ ЖЕ ІАΚΟ ΚΑΜΕΗΗЮ • ТѸΛΕСЕМЪ ΗΧЪ ΠΟΒΕΛѸВАЮТЪ • ΗΗ ΠΟΗѸ ΜΑΛΟΥ ΗМЪ ΟΨΛΑΒΟΥ ΔΑЮЩЕ • ΛЮБО ΓΟΒΗНО БОУΔΗ • ΛЮБО СΚΟΥΔΟΤА • Η ΗНІЕΔΗНОУ ΟΤЪΡΑΔΟΥ ΔΑУТЪ • КЪТО БОУДЕТЪ ΟΗѸΧЪ ΜΗΛѸН • ІЕΓΔА ΖΗΜΟΥ ΠРѸТЪРѸѸВЪШЕ • Η ΔЪЖΔЪ Η ΜΡΑΖЪ • Η ΒЪΔѸННІЕ Η ΖΗΟΗ • ΤЪΨΑΜА ΡΟΥΚΑΜА • ΟΧΟΔАТЪ ΟΤЪ ΗΗ ΧЪ • (7а) Η НЕ ΡΑΔΗ НЪ ΠΑУЕ ΠΕΥΑΛΛΗΗ Η ΒΟІАЩЕ СѦ ΠРѸΨЕΗΗА ΠΗСΤΑΒЪННІКЪ • (7б) ΟΤЪΧΟΔАТЪ ОУѸО ТАЦѸМЪЖДЕ ΥΛΕΚΟΜЪ СОУΨЕМЪ ІАΚΟ Η САΜΗ СОУЩЕ • (8) ΠΟΥѸТО ЖЕ ΜЪНОГО ГΛЮ • Η ΔЪНЕ {NE WG} ΚΡΑΨЮ {WKPATE WG} • (8а) ТѸМЪЖЕ ΒΛΑГО ВРѸΜА ІЕСТЪ • ΠѸРΡІКА ΠΗНΕΨΤΗ • ΔΑ ΡΕУЕТЪ ОУЖАСΗΗ СѦ ΝΕΒΟ • Η ΟУΨΤΡΑΨΗΗ СѦ ΖΕΜΛІЕ • ІАΚΟ ВЪ ΤΟΛΗΚΟ ΖѸѸРѸСТВО • ΠРѸΛΟЖΗ СѦ ΡΟΔЪ ΥΛΟΒѸЪСΚЪІН • СЕ ЖЕ ΓΛΑΓΟΛЮ • НЕ КЪΖΗΗ • ΗΗ ΔѸΛΑΗΗА • ΗΗ ΒΟΗΗѸΨΤΒА • ΗΗ СΕΛА ΧΟΥΛА • НЪ ΗЪІ САΜЪ • ΚΟΡΗΗА БО СЪТЪНІКЪ ВѸ • Η ΠΑΒЪΛЪ ОУΨЪΜΟΤΒΟΡЪЦЪ • Η ΔΑВЪІΔЪ ѸРЪ • Η ΗΩВЪ ΒΟΓΑТЪ • (8б) ΖΑΗЕ ΚЪЖЪΔΟ ΗΧЪ • СΤΡΟІАШЕ СВОІЕ ΔѸΛΟ •

(1) Πῶς οὖν διακείμεθα οἱ οὕτω διακείμεσθαι ὀφείλοντες; Καθ' ἑκάστην ἡμέραν εἰς τοὺς νόμους ἐνυβρίζομεν τοὺς αὐτοῦ. (2) Ἄλλὰ μὴ ἀγανακτήσητε, ἂν ἐπαφῶ τὴν γλῶτταν τοῖς ἁμαρτάνουσιν· οὐ γὰρ ὑμῶν κατηγορήσω μόνον, ἀλλὰ καὶ ἑμαυτοῦ. (3) Πόθεν οὖν βούλεσθε ἄρξομαι; ἀπὸ τῶν δούλων; ἀπὸ τῶν ἐλευθέρων; ἀπὸ τῶν στρατευομένων; ἀπὸ τῶν ἰδιωτῶν; ἀπὸ τῶν ἀρχόντων; ἀπὸ τῶν ἀρχομένων; ἀπὸ τῶν γυναικῶν; ἀπὸ τῶν ἀνδρῶν; ἀπὸ τῶν γερόντων; ἀπὸ τῶν νέων; ἀπὸ ποίας ἡλικίας; ἀπὸ ποίου γένους; ἀπὸ ποίου ἀξιώματος; ἀπὸ ποίου ἐπιτηδεύματος; Βούλεσθε ἀπὸ τῶν στρατευομένων ποιήσομαι τὴν ἀρχήν; Τί τοίνυν οὐχ ἁμαρτάνουσιν οὗτοι καθ' ἑκάστην ἡμέραν ὑβρίζοντες, λοιδοροῦμενοι, μαινόμενοι, [...] , λυκοὶ εὐοκότες, [...] Πρὸς μὲν γὰρ τοὺς ὁμοτίμους ζηλοτύπως διάκεινται, καὶ φθοноῦσι καὶ κενοδοξοῦσι· πρὸς δὲ τοὺς ὑποτεταγμένους, πλεονεκτικῶς· πρὸς δὲ τοὺς δίκας ἔχοντας, καὶ ὡς εἰς λιμένα κατατρέχοντας, πολεμῶς καὶ ἐπιόρκως. [...] (4) **Φέρε οὖν, καθ' ἑκαστον ἀρμόσωμεν τὸν τοῦ Χριστοῦ νόμον. Ὁ εἰπὼν τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ, Μωρὲ, ἔνοχος ἔσται τῇ γεέννῃ τοῦ πυρός. Ὁ ἐμβλέψας γυναικὶ πρὸς τὸ ἐπιθυμῆσαι, ἤδη ἐμοίχευσεν αὐτήν. Ἐὰν μὴ τις ταπεινώσῃ ἑαυτὸν ὡς τὸ παιδίον, οὐ μὴ εἰσέλθῃ εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν.** [...]. (5) Ἐὰν ἐν ἀριθμῆσαι διὰ ῥημάτων τὴν τῶν πραγμάτων πλημμέλειαν; Τί ἂν τις εἴποι τὰς χλευασίας αὐτῶν, τὸν γέλωτα, τὰς ἀκαίρους διαλέξεις, τὰς αἰσχρολογίας; Περὶ δὲ πλεονεξίας οὐδὲ εἰπεῖν ἐνι. [...] (6) Ἄλλὰ βούλεσθε τούτους ἀφέντες, ἐφ' ἑτέρους ἔλθωμεν ἐπιεικεστέρους; Φέρε οὖν, τὸ τῶν δημιουργῶν γένος καὶ χειροτεχνῶν ἐξετάσωμεν. Οὗτοι γὰρ μάλιστα δοκοῦσιν ἐκ δικαίων διαζῆν πόνων, [...] (6а) Τὴν γὰρ ἀπὸ τῆς πράσεως καὶ ἀγορασίας ἀδικίαν ἐπεισάγουσι τῇ τῶν δικαίων πόνων ἐργασία, καὶ ὄρκους καὶ ἐπιорκίας καὶ ψευδολογίας προστιθέασι τῇ πλεονεξία [...]. (6б) Τί ἂν τις εἴποι τὰς λοιδορίας [...], τὰς ὕβρεις, τὰ δανείσματα, τοὺς τόκους, τὰ συναλλάγματα τὰ πολλῆς γέμοντα κατηλείας, τὰς ἐμπορίας τὰς ἀναισχύντους; (7) γ'. Ἄλλὰ βούλεσθε καὶ τούτους ἀφέντες, ἐφ' ἑτέρους ἔλθωμεν, τοὺς δὴ δοκοῦντας εἶναι δικαιότερους; Τίνες οὖν εἰσιν οὗτοι; Οἱ τοὺς ἀγροὺς κεκτημένοι, [...]. Καὶ τί τούτων γένοιτ' ἂν ἀδικώτερον; Εἰ γὰρ τις ἐξετάσειε πῶς τοῖς ἀθλίοις καὶ ταλαιπώροις κέχρηται γεωργοῖς, βαρβάρων αὐτοὺς ὠμότερους ὄψεται. [...] καὶ διακονίας ἐπιπόνους ἐπιτάττουσι, καὶ ὡς ὄνοις καὶ ἡμιόνοις, μᾶλλον δὲ ὡς λίθοις τοῖς ἐκείνων κέχρηται σώμασιν, οὐδὲ μικρὸν ἀναπνεῦσαι συγχωροῦντες, καὶ παρεχούσης τῆς γῆς, καὶ μὴ παρεχούσης, [...] καὶ οὐδεμιᾶς αὐτοῖς συγγνώμης μεταδίδοασιν· οὐ τί γένοιτ' ἂν ἔλεεινότερον, ὅταν δι' ὀλοκλήρου τοῦ χειμῶνος πονέσαντες, καὶ κρυμῶ καὶ ὄμβρῳ καὶ ἀγρυπνίαις δαπανηθέντες, κεναῖς ἀναχωρήσωσι ταῖς χερσίν, (7а) ἔτι καὶ προσοφείλοντες, καὶ τοῦ λιμοῦ τούτου καὶ τοῦ ναυαγίου τὰς τῶν ἐπιτρόπων βασάνους καὶ τοὺς ἔλκυσμούς καὶ τὰς ἀπαιτήσεις καὶ τὰς ἀπαγωγὰς καὶ τὰς ἀπαραιτήτους λειτουργίας μᾶλλον δεδοικότες καὶ φρίττοντες; [... (7б) ἀνθρώπου ὄντος...] (8а) Διὸ δὴ τὸν προφήτην εὐκαιρον παραστησάμενον εἰπεῖν· Ἐκστηθι, οὐρανὲ, καὶ φρίξον, γῆ· εἰς ὄσσην θηριωδίαν τὸ τῶν ἀνθρώπων γένος ἐξεβακχεύθη. Ταῦτα δὲ λέγω, οὐ τέχνας, οὐδὲ γεωργίαν, οὐδὲ στρατείαν, οὐδὲ ἀγροὺς διαβάλλων, ἀλλ' ἡμᾶς αὐτούς. Ἐπει καὶ ὁ Κορνήλιος ἑκατοντάρχης ἦν, καὶ ὁ Παῦλος σκυτοτόμος, [...] καὶ ὁ Δαυὶδ βασιλεὺς ἦν· καὶ ὁ Ἰὼβ χωρίων ἀπήλαυε καὶ πολλῶν προσόδων. [...]

За непосредственото използване на хомилиите на Йоан Златоуст сравни:

Котова, Д. Слово 19 от Учителното евангелие и неговите гръцки източници. – *Palaeobulgarica*, 46, 2022, 1, 3–28.

Petrov, I. The Greek Sources of Učitel'noe Evangelie Revisited: Sermon 20. – *Palaeobulgarica*, 46, 2022, 2, 3–28.

За словата, разясняващи перикопи от Ев. на Лука, Константин използва
основната катена от тип А към Лука (CPG C 130)

В средните части на слова 29, 31–35, които трябва да разясняват перикопи от Ев. На Лука, обаче са преведени текстове от катената към Матей. ЗАЩО?

- ⊖ В гръцкия извор (катена А) липсват коментари към евангелския текст на Лука;
- ⊖ Препратки към коментарите на паралелните места от Ев. на Матей, направени в основната катена към Матей.

Тълкувателната част на 33 = тълкувателната част на 13 + началото на тълкуванието в слово 14 (притчата за гадаринския бесноват, легиона бесове и стадото свини)

УЕ 196b9–197a4–5 Край на 42 слово	Катена А, VI . CPG C130
НЦН ΖΑ · ΓΙ̇ · ΕΒΔ̇ · · ΒΙ̇ · ΕΥΛΗΝΑ · Ὢ ΜΔ̇·	Περὶ τῶν βρεφῶν καὶ περὶ τοῦ εἰπόντος διδασκάλου ἕως “καὶ τῆ τρίτη ἡμέρα ἀναστήσεται” προεγγραφή εἰς τὸ κατὰ Ματθαῖον.]

42 слово: притча за десетте прокажени (Лк 17.12-19)

- Словото *има екзегетична част*, макар и много кратка.
- Тя е *превод от гръцки*.
- Първообразът е *catena in Lucam Turis A*.
- *Вмъкнати допълнения* < влияние на друга catena към Лука / друг източник (напр. сборник със схолии)

LE 195c15–195d14	Catena Typus A (Grundform A Reuss), 6. Jh.	Catena Typus B (Vollkatene A Reuss), 7. Jh.	Catena Typus F (Niketaskatene), 11. Jh.
<p>(1) <u>ΜΗΛΟCΤΪΒΖ ΒΟ Η ΥΕΛΟΒΨ//</u> ΚΟΛΗΒΨЦЬ СЗИΗ ΓΨ НАШЬ ΗCΥ ΧΨ • ΗΗ ΓΡΑΔΑ ΗΗ ΒΨΗ УСТАВΛΑΕΤΨ •</p>	<p>(1) [οὔτοι γὰρ πό-λεων καὶ κωμῶν ἀπελαινόμενοι ὡς ἀκάθαρτοι κατὰ τὸν Μωϋσέως νόμον, ὑπαντήσαντες τῷ Σωτῆρι,]</p>	<p>(1) [οὔτοι γὰρ πόλεων τε καὶ κωμῶν ἀπελαινόμενοι ὡς ἀκάθαρτοι κατὰ τὸν Μωϋσέως νόμον, ὑπαντήσαντες τῷ Σωτῆρι,]</p> <p>(2) ἐλπάρουν ἀπαλλάττεσθαι τοῦ κακοῦ, [καὶ ἐπιστάτην ὠνόμαζον, τουτέστι διδάσκαλον.]</p>	<p>(1) [ΚΥΡΙΑΛΛΟΥ: ... οὔτοι γὰρ πόλεων τε καὶ κωμῶν ἀπελαινόμενοι ὡς ἀκάθαρτοι κατὰ τὸν Μωϋσέως νόμον...] [... ΚΥΡΙΑΛΛΟΥ: οἱ γε μὴν λεπροὶ ὑπαντήσαντες τῷ Σωτῆρι,]</p> <p>(2) ἐλπάρουν ἀπαλλάττεσθαι τοῦ κακοῦ, [ἐπιστάτην ὠνόμαζον, τουτέστι διδάσκαλον. ΤΙΤΟΥ: ...</p> <p>ΚΥΡΙΑΛΛΟΥ: (3) Οὐκ ἠλέει τις αὐτοὺς παθόντας τὴν νόσον· <u>ὁ δὲ ταύτης ἔνεκα τῆς αἰτίας ὀφθεις ἐπὶ γῆς, καὶ γενόμενος ἄνθρωπος ἴνα πάντα ἐλεήσῃ, αὐτὸς ἐσπλαγγίσθη καὶ ᾤκτειρεν.</u>]</p>
<p>(2) ΜΟΛΑΨΕ ῶ ΛΥΤΑΔΓΟ ΗΕΔΟΥΓΑ ΪCΤΡΨΒΗΤΗ CΑ •</p>	<p>(2) παρεκάλουν ἀπαλλάττεσθαι τοῦ κακοῦ.</p>	<p>(3) <u>ὁ δὲ φιλόανθρωπος ὢν,</u> (36) ἔφη, [“ὑπάγετε,] δείξατε ἑαυτοὺς τοῖς ἱερεῦσι.” (Lk. 17.14) [Διὰ τί μὴ μᾶλλον ἔφη, θέλω, καθαρίσθητι, καθὰ καὶ ἐφ’ ἑτέρου λεπροῦ, προστέταχε δὲ μᾶλλον, ἑαυτοὺς ἐπιδείξατε τοῖς ἱερεῦσι; (3a) νόμος ἐκάλει πρὸς τοῦτο πάλιν τοὺς τῆς λέπρας ἀπηλλαγμένους. Ἐκέλευε γὰρ ὡς ἤδη τεθεραπευμένους βαδίζειν, καὶ τοὺς τῶν Ἰουδαίων καθηγητὰς, δηλονότι τοὺς ἱερεῖς, διαμαρτυρασθαι, ὅτι παρ’ ἐλπίδα καὶ παραδόξως ἀπηλλάγησαν τοῦ κακοῦ, τοῦ Χριστοῦ τοῦτο κατανεύσαντος.]</p>	<p>(36) καὶ ἰδὼν εἶπεν αὐτοῖς· Πορευθέντες ἐπιδείξατε ἑαυτοὺς τοῖς ἱερεῦσι. (Lk. 17.14) [Καὶ διὰ τί μὴ μᾶλλον ἔφη· Θέλω, καθαρίσθητε, καθὰ καὶ ἐφ’ ἑτέρου λεπροῦ, προστέταχε δὲ μᾶλλον ἑαυτοὺς ἐπιδείξει τοῖς ἱερεῦσι; (3a) Νόμος ἐκάλει πρὸς τοῦτο πάλιν τοὺς τῆς λέπρας ἀπηλλαγμένους· ἐκέλευε γὰρ ἑαυτοὺς ἐπιδεικνύειν τοῖς ἱερεῦσιν, καὶ θυσίαν προσάγειν ὑπὲρ τοῦ καθαρισμοῦ. Ὡς οὖν ἤδη τεθεραπευμένους βαδίζειν ἐκέλευσε, καὶ τρόπον τινὰ διαμαρτύρασθαι τοὺς ἱερέας, ἥτοι τοὺς Ἰουδαίων καθηγητὰς, τοὺς αἰεὶ βασκαίνον τας αὐτοῦ τῆ δόξῃ, ὅτι παρ’ ἐλπίδα καὶ παραδόξως ἀπηλλάγησαν τοῦ κακοῦ, κατανεύσαντος αὐτοῖς τὴν ἴασιν τοῦ Χριστοῦ. Οὐκ ἐθεράπευσε πρῶτον, ἀλλ’ ἔπεμψε πρὸς τοὺς ἱερέας, ἐπειδὴ οἱ ἱερεῖς τὰ τεκμήρια ἤδεισαν τῆς λέπρας, καὶ τοῦ πότε θεραπεύεται· ἔπεμψε πρὸς τοὺς ἱερέας, συνέπεμψε αὐτοῖς καὶ τὴν θεραπείαν...]</p>
<p>(3) ΩΝΖ ЖЕ ΜΗ ΛΟCΤΗΒΖ CΨI •</p>	<p>(3) <u>ὁ δὲ φιλόανθρωπος ὢν ἐλεήσας</u></p>		
<p>(3a) Η ΔΑ ΗΕ ΨΑΒΗ ΤΨ CΑ ΠΡΟΤΒΗΝΖ ΖΑΚΟΗΟΥ ΜΟCΕΟΒΨ •</p>	<p>(36) αὐτοὺς [ταύτης]</p>		
<p>(36) ῶΠΟΥCΤΗ ΗΑ ΡΕΚΨ • ΠΟΚΑЖΗΤΕ CЕΒЕ ΗΙΕΡΕУМΨ •</p>	<p>ἀπήλλαξεν.</p>		

Πῦλνο ϑῶτветствие между превода и текста на катена А

LE 195d14–196a1	Catena Typus A (Grundform A Reuss), 6. Jh.	Catena Typus B (Vollkatene A Reuss), 7. Jh.	Catena Typus F (Niketaskatene), 11. Jh.
<p>(4) БѢША ЖЕ ДѢВАТЬ Ж НДОВЕ• А КЕΔΗΝΩ САΜΑΡΑΝΗΝΩ• Η ΣΤΕΛΕΒΩΣΗΕ ЖЕ• Η ΔΟΥΨΕ ΙΑΚΟЖЕ ΠΟΒΕΛΩ Η ΜΩ ΠΟΚΑΖΑΤΙ ΣΑ ΗΙΕ ΡΩΜΩ•</p>	<p>(4) [ὧν] οἱ μὲν ἐννέα ὑπῆρχον Ἰουδαῖοι, ὁ δὲ εἷς Σαμαρείτης· τυχόντες τοίνυν τῆς ἰάσεως ἐν τῷ ὑπάγειν αὐτοὺς, καθὼς ἐκελεύσθησαν εἰς τὸ δεῖξαι ἑαυτοὺς τοῖς ἱερεῦσι·</p>	<p>(4) καὶ δὴ] ἐν τῷ αὐτοὺς ὑπάγειν καθαροὶ γίνονται, ...</p>	<p>(4) ΚΥΡΙΛΛΟΥ: Πεπράχασι μὲν τὸ κεκελεσμένον οἱ δέκα· καὶ ἀπελθόντες, ἐθεραπέυθησαν· (6) εἷς δὲ μόνος ὑποστρέψας ἀνατίθει τὰ χαριστήρια· ...</p>

LE 196a2–b8

(5) ΔΕΒΑΤЬ ΟΥΒΟ ΝΕΠΟ-
ΧΒΑΛΗΝΟΥ ΒΟΛЮ ΒΖСПΡΗΝΗ
ΜΖШЕ· ΝΕ ΒΖΖΒΡΑΤΗША СΑ
ΒΖΖΔΑΤΗ ΚΕΜΟΥ СЛАΒΟΥ
ІАКО ΒΟΥ·

(6) ІЄДННЗ ЖЕ ТЗУЫЖ ННО-
ПЛѢМЕНЬНЗИН· **ΒΖΖΒΡΑΤΗ**
СА ΧΒΑΛΟΥ ΚΕΜΟΥ ΠΡΗΝΟΣΑ·

(7) ΟΥНЬШЕ ВО СΟΥТЬ **ІАЗЫ**
ΥΒННЦН НА ВѢРОУ· ПАУЕ

(7a) **ЖЕСТОСРЪДЗИНХЪ** ЖН
ДОВЪ· (8) ТѢМЪЖЕ Н ВЛ
ДКА РЕУЕ· **НЕ ДЕСАТЬ ЛН**

СА ΟΥΪСТΗША·

(9) СРАМЛА//ІА ВЕСТΟΥДЬНА
ЛІЦА ЖНДОВЬСКА·

(9a) ΠΡΗΝΗΜΖШННХЪ ΜΝΟΓΖ
ΒΛΓΟΔѢΤΗН Ѡ ΒΑ І ОЦА· Н

(9b) НА ΝΕΠΟΧΒΑΛΕΝНІЄ
ΟΥΒΡΑΤΑЦІІНХЪ СА·:

Catena Typus A, 6. Jh

(5) οἱ μὲν ἐννέα εἰς
ἀχάριστον λήθην
ἐμπεσόντες, οὐχ
ὑπέστρεψαν δοῦναι
δόξαν αὐτῷ ὡς Θεῷ·

(6) ὁ εἷς δὲ μόνος ὁ
ἀλλογενῆς τὴν
εὐχαριστίαν
προσέφερεν·

(7) ἐτοιμότεροι γὰρ εἰς
πίσιν **οὔτοι** παρὰ (7a)
τοὺς **ἀχαρίστους**
Ἰουδαίους· (8) ὅθεν ὁ
δεσπότης Χριστός
φησιν, “**οὐχ οἱ δέκα**
ἐκαθαρίσθησαν,” (Lk
17.17) [καὶ τὰ ἐξῆς.]

Catena Typus B, 7. Jh.

(5) οἱ μὲν ἐννέα [ἄτε Ἰουδαῖοι
ὄντες], εἰς ἀχάριστον λήθην
ἐμπεσόντες, οὐχ ὑπέστρεψαν
δοῦναι δόξαν τῷ Θεῷ, [ὅθεν

(7a) **σκληροκάρδιον** καὶ
ἀμνήμονα παντελῶς δεικνύει
τὸν Ἰσραὴλ, ὁ δὲ ἀλλογενῆς,
τουτέστιν ὁ Σαμαρείτης, διὰ
τὸ ἐξ Ἀσσυρίων κατάγειν τὸ
γένος ἀλλογενῆς· οὐ γὰρ
μάτην λέγει, ἐν μέσῳ τῆς
Σαμαρείας καὶ Γαλιλαίας καὶ
Ἰουδαίας, “ὑπέστρεψε μετὰ
φωνῆς μεγάλης δοξάζων τὸν
Θεόν.” Δεικνύει οὖν ὅτι οἱ
Σαμαρεῖται εὐγνώμονες,]

(9) Ἰουδαῖοι δὲ (9a) εὐεργε-
τούμενοι (9b) ἀχαριστοῦσιν.

Catena Typus F, 11. Jh.

ΚΥΡΙΑΛΟΥ: Πειράχασι μὲν τὸ κεκελεσμένον
οἱ δέκα· καὶ ἀπελθόντες, ἐθεραπεύθησαν·

(6) εἷς δὲ μόνος **ὑποστρέψας** ἀνατίθει τὰ
χαριστήρια· (5) τῶν ἐννέα [τάχα που καὶ]
εἰς ἀχάριστον λήθην ἐμπεσόντων...

[ΤΙΤΟΥ: ἐπισεμαίνεται τοῦτο Χριστός, ὅτι
δέκα ἦσαν, ἵνα τοὺς παρόντας ἀναμνήση
τοῦ πρὸ μικροῦ γενομένου θαύματος, καὶ
ὅτι] Ἑβραῖοι οὐχ ὑπέστρεψαν δοῦναι
δόξαν ὡς θεῷ,

(7a) **σκληροκάρδιον** καὶ (9b) **ἀχάριστον**
καὶ ἀμνήμονα παντελῶς (9a) **ὧν ἂν**
εὐπαθοῖ, (9) **δεικνύων τὸν Ἰσραὴλ**.
[ἐπαινεῖ δὲ τὸν Σαμαρείτην, ὅτι καίτοι
ἀλλογενῆς ὧν διὰ τὸ ἐξ Ἀσσυρίων
κατάγειν τὸ γένος ἔδωκε δόξαν αὐτῷ,
τουτέστιν ἐπίστευσεν εἰς αὐτόν.] (7)
ἐτοιμότεροι γὰρ εἰς πίσιν οἱ ἀλλογενεῖς,
[[βραδὺς δὲ εἰς εὐπίθειαν δι’ αὐτῶν πεφῶραται
τῶν πραγμάτων ὁ Ἰσραὴλ, ὥσπερ οὖν κἀνταῦθα
φανερὰ γέγονεν ἢ διαφορᾶ τῶν προαιρέσεων.]

Затова и аз, презреният, покровителстван, както казах, да преведа от гръцки език на славянски тълкованието на светото евангелие, страхувах се и треперех, като видях слова, повисоки от моето разбиране и сила. Ала после, уплашен от смърт поради непослушанието [си], започнах, без да мога да напиша всичко, но обичайните неделни [евангелски тълкования], молейки за помощ молитвите от всички христоролюбци.

(из Пролог към Учит. Евангелие, прев. Клементина Иванова)



Въведение

- повече реторика:
 - директни обръщания (напр. „братя!“)
 - Глаголни форми във 2 л. ед. и мн. ч., но често и в 1 л. мн. ч.
- библейски цитати
- къси молитви
- литературни фигури и тропи
- повече диалогичност и емоционално натоварени думи

Тълкувание

- катенен текст
- ексцерпти на Константин от хомилиите на Златоуст
- собствени думи на Константин

↓
Възстановяване на риторичния стил на хомилията

Заклучение
В риторичен стил като въведението

↓
Своеобразна къса хомилия

Благодаря за вниманието.